वर्ण विचार

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» वर्ण: सबसे छोटी ध्वनि-इकाई

प्रश्न 1 (आसान). 'भाषा की सबसे छोटी इकाई' किसे कहते हैं?
उत्तर – वर्ण

प्रश्न 2 (आसान). वर्ण की पहचान किस आधार पर होती है– लिखावट या ध्वनि?
उत्तर – ध्वनि के आधार पर

प्रश्न 3 (मध्यम). पाणिनि ने वर्णमाला को कितने सूत्रों में प्रस्तुत किया?
उत्तर – 14 सूत्रों में

प्रश्न 4 (कठिन). क्यों कहा जाता है कि वर्ण-विचार का आधार वर्ण है?
उत्तर – क्योंकि आगे स्वर/व्यंजन और अन्य वर्गीकरण/नियम 'उसी सबसे छोटी ध्वनि-इकाई' (वर्ण) को जानकर ही सही तरीके से तय होते हैं।

» माहेश्वर सूत्र और 14 ध्वनियाँ (सूत्र-परंपरा)

प्रश्न 5 (आसान). माहेश्वर सूत्रों की संख्या कितनी है?
उत्तर – 14

प्रश्न 6 (आसान). माहेश्वर सूत्र 'एओङ्' और 'ऐऔचच्' में कौन से स्वर हैं?
उत्तर – ए, ओ, ऐ, औ

प्रश्न 7 (मध्यम). पांचवें सूत्र 'हयवरट्' में कौन से व्यंजन वर्ण हैं और 'इत्' वर्ण कौन सा है?
उत्तर – व्यंजन वर्ण ह्, य्, व्, र् हैं और 'इत्' वर्ण 'ट्' है।

प्रश्न 8 (कठिन). माहेश्वर सूत्रों को 'माहेश्वर' सूत्र क्यों कहा जाता है? इसके पीछे की परंपरा संक्षेप में बताइए।
उत्तर – माहेश्वर सूत्र भगवान शिव (महेश्वर) के डमरू की 14 ध्वनियों से उत्पन्न हुए माने जाते हैं, जब उन्होंने तांडव नृत्य के बाद 14 बार डमरू बजाया था। पाणिनी ने इन्हें 'शिवसूत्रजालम्' के रूप में संकलित किया।

» प्रत्यायाहार: दो वर्णों से समूह बनाना

प्रश्न 9 (आसान). माहेश्वर सूत्रों के अनुसार 'अच्' प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण आते हैं?
उत्तर – अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ

प्रश्न 10 (आसान). 'हल्' प्रत्याहार किसे कहते हैं?
उत्तर – सभी व्यंजन वर्णों को (ह से ल तक के बीच के सभी व्यंजन, इत् वर्णों को छोड़कर)

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर 'इक्' प्रत्याहार बनाना हो, तो उसमें कौन से वर्ण शामिल होंगे?
उत्तर – इ, उ, ऋ, ऌ (प्रथम सूत्र के 'इ' से दूसरे सूत्र के 'क्' तक, 'ण्' को छोड़कर)

प्रश्न 12 (कठिन). 'झल्' प्रत्याहार में कौन-कौन से वर्ण आते हैं और आप इसकी रचना कैसे करेंगे?
उत्तर – झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्। इसकी रचना करने के लिए, आठवें सूत्र 'झ भ ञ्' के 'झ्' से शुरू करके चौदहवें सूत्र 'हल्' के 'ल्' तक सभी वर्णों को लेना है, और बीच के सभी 'इत्' वर्णों (ञ्, ष्, श्, व्, य्, र्, ल्, म्, ङ्, ण्, न्, म्, ङ्, ण्, न्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स्, ह्) को छोड़ना है। (इस उत्तर में 'इत्' वर्णों का उल्लेख पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रत्याहार के वर्णों के आधार पर किया गया है, सभी माहेश्वर सूत्रों को विस्तृत रूप से नहीं दिया गया है।)

» स्वर: ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत

प्रश्न 13 (आसान). ह्रस्व स्वर कितने होते हैं और कौन-कौन से हैं?
उत्तर – पाँच: अ, इ, उ, ऋ, ऌ (इनको मूल स्वर भी कहते हैं)।

प्रश्न 14 (आसान). दीर्घ स्वर किस समय के होते हैं?
उत्तर – जिनके उच्चारण में 2 मात्राओं का समय लगे।

प्रश्न 15 (मध्यम). 'ए' 'ऐ' 'ओ' 'औ' ये किस प्रकार के स्वर हैं?
उत्तर – ये सभी दीर्घ स्वर हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). 'ऌ' का दीर्घ रूप कौन-सा बताया गया है? और वह कहाँ मिलता है?
उत्तर – 'ऌ' का दीर्घ रूप 'ॡ' है, जो केवल वेदों में प्राप्त होता है।

प्रश्न 17 (कठिन). यदि किसी संबोधन पद के अंतिम स्वर पर '३' लिखा हो, तो वह कौन-सा स्वर होगा? कारण लिखो।
उत्तर – वह प्लुत होगा, क्योंकि '३' से 3 या उससे अधिक मात्राओं का समय दिखाया जाता है।

» अनुनासिक और निरनासिक (स्वरों के भेद)

प्रश्न 18 (आसान). 'इँ' अनुनासिक है या निरनासिक?
उत्तर – अनुनासिक (क्योंकि 'इँ' में 'ँ' है)।

प्रश्न 19 (आसान). 'उ' अनुनासिक है या निरनासिक?
उत्तर – निरनासिक ('उ' पर 'ँ' नहीं है)।

प्रश्न 20 (मध्यम). दिए गए चार में से अनुनासिक कौन-कौन हैं–अ, अँ, ओ, औं?
उत्तर – अँ और औं अनुनासिक हैं; अ और ओ निरनासिक हैं।

प्रश्न 21 (कठिन). तुम्हें लिखित स्वर केवल 'ँ' के बिना और 'ँ' के साथ दिए गए हों। नियम बनाकर बताओ: किस तरह पहचान करोगे कि स्वर अनुनासिक है?
उत्तर – स्वर के ऊपर 'ँ' लगा हो तो वह अनुनासिक होगा, क्योंकि उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता होती है।

» व्यंजन/हल: स्वर-रहित ध्वनि और वर्तनी-चिह्न

प्रश्न 22 (आसान). 'हल्' का चिह्न कौन-सा है?
उत्तर – ् (◌्)

प्रश्न 23 (आसान). 'क्' लिखने पर स्वर-रहित समझेंगे या स्वर-युक्त?
उत्तर – स्वर-रहित

प्रश्न 24 (मध्यम). क-वर्ग के स्वर-रहित अक्षर (तालिका के अनुसार) लिखो।
उत्तर – क् ख् ग् घ् ङ्

प्रश्न 25 (कठिन). व्यंजन की परिभाषा एक लाइन में लिखो और साथ में कारण भी बताओ–क्यों स्वर चाहिए?
उत्तर – व्यंजन स्वर की सहायता के बिना उच्चरित नहीं हो सकता; इसलिए स्वर चाहिए कि ध्वनि पूरी तरह बन सके।

» व्यंजन के तीन प्रकार: स्पर्श, अंतःस्थ, ऊष्म

प्रश्न 26 (आसान). 'य्' किस प्रकार का व्यंजन है?
उत्तर – अंतःस्थ

प्रश्न 27 (आसान). 'स्' किस प्रकार का व्यंजन है?
उत्तर – ऊष्म

प्रश्न 28 (मध्यम). 'ङ्, ञ्, ण्, न्, म्' किस प्रकार में आते हैं?
उत्तर – ये स्पर्श के वर्ग-अंत हैं; साथ ही ये अनुनासिक हैं। (समूह: अनुनासिक)

प्रश्न 29 (कठिन). 'ल्' और 'ह्' को प्रकार के अनुसार लिखो और एक-एक वज़ह भी बताओ।
उत्तर – ल्–अंतःस्थ (अंतःस्थ: य्, र्, ल्, व्); ह्–ऊष्म (ऊष्म: श्, ष्, स्, ह्)।

» अनुस्वार, विसर्ग और संयुक्त व्यंजन

प्रश्न 30 (आसान). 'रामः' में विसर्ग (:) का उच्चारण कैसे होगा?
उत्तर – स्वर के बाद 'ह्' सदृश हल्का उच्चारण।

प्रश्न 31 (आसान). 'कं' में 'ं' का उच्चारण क्या है?
उत्तर – नासिका-मात्रा (ं) – नाक से ध्वनि।

प्रश्न 32 (मध्यम). सामान्य नियम लिखो: 'म्' से पहले अनुस्वार में क्या बदलाव होता है?
उत्तर – सामान्यतः 'म्' व्यंजन वर्ण से पहले 'ं' (अनुस्वार) हो जाता है।

प्रश्न 33 (कठिन). निम्न में संयुक्त व्यंजन का सिद्धांत लिखकर उदाहरण के साथ समझाओ: 'क् + ष्'
उत्तर – दो व्यंजनों के संयोग से बना वर्ण संयुक्त व्यंजन कहलाता है; 'क् + ष्' को साथ मिलाकर एक ध्वनि की तरह उच्चारित करते हैं (क्ष् जैसा समूह)।

» उच्चारण-स्थान (कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका)

प्रश्न 34 (आसान). 'प्' का उच्चारण-स्थान क्या है?
उत्तर – ओष्ठ

प्रश्न 35 (आसान). 'त्' का उच्चारण-स्थान क्या है?
उत्तर – दन्त

प्रश्न 36 (मध्यम). 'ट्' और 'त्' में कौन-सा उच्चारण-स्थान अलग होता है?
उत्तर – 'ट्' मूर्धा में, 'त्' दन्त में

प्रश्न 37 (मध्यम). 'क्' का उच्चारण-स्थान किसे कहते हैं?
उत्तर – कण्ठ

प्रश्न 38 (कठिन). नासिका से जुड़ी ध्वनियों में हवा कहाँ से ज्यादा निकलती/प्रभाव देती है?
उत्तर – नाक के रास्ते (नासिका) से

प्रश्न 39 (कठिन). जब जीभ का सिरे से दाँतों के पास टच लगता है तो उच्चारण-स्थान क्या होगा?
उत्तर – दन्त

प्रश्न 40 (कठिन). 'च्' और 'ट्' में अंतर उच्चारण-स्थान के स्तर पर क्या है?
उत्तर – 'च्'–तालु की तरफ, 'ट्'–मूर्धा में

» प्रयत्न: आभ्यन्तर और बाह्य प्रयत्नों के भेद

प्रश्न 41 (आसान). आभ्यन्तर प्रयत्न किससे सम्बन्धित है?
उत्तर – मुख के अन्दर/भीतर की चेष्टा से।

प्रश्न 42 (आसान). बाह्य प्रयत्न किससे सम्बन्धित है?

उत्तर – फेफड़े से कण्ठ तक की चेष्टा से।

प्रश्न 43 (मध्यम). आभ्यन्तर प्रयत्न के पाँच भेदों के नाम लिखो।

उत्तर – स्पृष्ट, ईषत्-स्पृष्ट, विवृत, ईषत्-विवृत, संवृत।

प्रश्न 44 (कठिन). बताओ–'श्, ष्, स्, ह्' किस आभ्यन्तर प्रयत्न से उच्चारित होते हैं?

उत्तर – ईषत्-विवृत।

प्रश्न 45 (कठिन). बताओ–ह्रस्व 'अ' का आभ्यन्तर प्रयत्न क्या है?

उत्तर – संवृत।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. बताओ– 'वर्ण' को सबसे छोटी ध्वनि-इकाई क्यों कहा जाता है? एक उदाहरण देकर समझाओ।

› किसी वाक्य को ध्यान से बोलो: उसमें अलग-अलग आवाज़ के हिस्से आते हैं।

› अब उन हिस्सों को और तोड़ो– जैसे स्वर/व्यंजन की ध्वनि अलग-अलग महसूस होती है।

› जब ध्वनि को और तोड़ने पर कोई और छोटा 'आवाज का टुकड़ा' नहीं बचता, वही सबसे छोटी ध्वनि-इकाई बनती है।

› इसी को 'वर्ण' कहते हैं। उदाहरण: 'अ' जैसी एक ध्वनि को तुम आगे छोटा नहीं कर पाते, इसलिए 'अ' वर्ण है।

उत्तर – क्योंकि वर्ण बोलते समय भाषा की सबसे छोटी ध्वनि-इकाई है– जिसे आगे तोड़ने पर कोई छोटा ध्वनि-टुकड़ा नहीं बचता। जैसे 'अ' एक ध्वनि है जिसे और छोटा नहीं किया जा सकता, इसलिए 'अ' वर्ण है।

उदाहरण 2. माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' और 'ऋलृक्' से कौन-कौन से मूल स्वर प्राप्त होते हैं, और कौन से 'इत्' वर्ण हैं?

› पहला सूत्र है 'अइउण्'। इसमें मूल स्वर 'अ', 'इ', 'उ' हैं।

› इस सूत्र का अंतिम वर्ण 'ण्' है, जो 'इत्' वर्ण है।

› दूसरा सूत्र है 'ऋलृक्'। इसमें मूल स्वर 'ऋ', 'ऌ' हैं।

› इस सूत्र का अंतिम वर्ण 'क्' है, जो 'इत्' वर्ण है।

उत्तर – माहेश्वर सूत्र 'अइउण्' और 'ऋलृक्' से प्राप्त मूल स्वर 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ' हैं, और 'इत्' वर्ण 'ण्' तथा 'क्' हैं।

उदाहरण 3. माहेश्वर सूत्रों के आधार पर 'यण्' प्रत्याहार में आने वाले वर्ण लिखिए।

› सबसे पहले, माहेश्वर सूत्रों में 'य' कहाँ आता है, वो देखें। यह 'हयवरट्' (पांचवां सूत्र) में आता है।

› फिर, 'ण्' कहाँ आता है, वो देखें। यह 'लण्' (छठा सूत्र) में आता है।

› अब 'य' से लेकर 'ण्' तक के बीच के वर्णों को गिनें, लेकिन 'इत्' वर्णों को छोड़ दें।

› 'हयवरट्' से 'य, व, र' और 'लण्' से 'ल' मिलते हैं।

› 'ट्' और 'ण्' 'इत्' वर्ण हैं, इन्हें नहीं गिना जाएगा।

उत्तर – 'यण्' प्रत्याहार में आने वाले वर्ण हैं: य्, व्, र्, ल्।

उदाहरण 4. निर्धारित करो कि निम्न में कौन-सा स्वर ह्रस्व, कौन-सा दीर्घ और कौन-सा प्लुत है: अ, आ, ओ३म्।

› पहले ह्रस्व वाले नियम को देखो: 1 मात्रा–पाठ में ह्रस्व के स्वर हैं: अ, इ, उ, ऋ, ऌ। इसलिए 'अ' ह्रस्व है।

› फिर दीर्घ वाले नियम को देखो: 2 मात्रा–दीर्घ स्वर हैं: आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ। इसलिए 'आ' दीर्घ है।

› अब प्लुत के नियम को देखो: 3 या उससे अधिक मात्रा; लिपि में '३' से चिन्हित। 'ओ३म्' में '३' लिखा है, इसलिए यह प्लुत है।

उत्तर – अ = ह्रस्व, आ = दीर्घ, ओ३म् = प्लुत

उदाहरण 5. बताओ कि नीचे दिए गए स्वरों में कौन अनुनासिक है और कौन निरनासिक: अँ, अ, एँ, ए

› पहले नियम लगाओ: अनुनासिक में 'ँ' होता है।

› 'अँ' में 'ँ' है, इसलिए यह अनुनासिक है (मुख के साथ नासिका की भी सहायता)।

› 'अ' में 'ँ' नहीं है, इसलिए यह निरनासिक है (सिर्फ मुख से)।

› 'एँ' में 'ँ' है, इसलिए यह अनुनासिक है।

› 'ए' में 'ँ' नहीं है, इसलिए यह निरनासिक है।

उत्तर – अँ–अनुनासिक, अ–निरनासिक, एँ–अनुनासिक, ए–निरनासिक।

उदाहरण 6. निम्नलिखित में स्वर-रहित व्यंजन कैसे लिखा जाएगा: (i) क-वर्ग का पहला व्यंजन (ii) प-वर्ग का पहला व्यंजन।

› क-वर्ग का पहला व्यंजन 'क' है। स्वर-रहित लिखने के लिए 'क' के नीचे हल् (्) लगाओ: क्

› प-वर्ग का पहला व्यंजन 'प' है। स्वर-रहित लिखने के लिए 'प' के नीचे हल् (्) लगाओ: प्

› अब दोनों में समझो कि ् के कारण स्वर नहीं जोड़ा गया है

उत्तर – (i) क् (ii) प्

उदाहरण 7. दिए गए वर्णों: क्, र्, श्, म्, व्, ष् – बताओ ये किस प्रकार (स्पर्श/अंतःस्थ/ऊष्म) के हैं।

› क् को देखो: क् से म् तक वाले 25 वर्ण = स्पर्श। इसलिए क् स्पर्श।

› र् को देखो: अंतःस्थ में य्, र्, ल्, व् आते हैं। इसलिए र् अंतःस्थ।

› श् को देखो: ऊष्म में श्, ष्, स्, ह् आते हैं। इसलिए श् ऊष्म।

› म् को देखो: क् से म् तक वाले 25 वर्ण = स्पर्श। इसलिए म् स्पर्श (और ये वर्ग-अंत भी है, इसलिए अनुनासिक भी होगा)।

› व् को देखो: अंतःस्थ = य्, र्, ल्, व्। इसलिए व् अंतःस्थ।

› ष् को देखो: ऊष्म में श्, ष्, स्, ह् आते हैं। इसलिए ष् ऊष्म।

उत्तर – क्–स्पर्श, र्–अंतःस्थ, श्–ऊष्म, म्–स्पर्श (अनुनासिक), व्–अंतःस्थ, ष्–ऊष्म।

उदाहरण 8. निम्न शब्दों में (i) 'ं' कहाँ है और उसका उच्चारण कैसा होगा? (ii) ':' कहाँ है और उसका उच्चारण कैसा होगा? (iii) संयुक्त व्यंजन वाला भाग पहचानो और साथ मिलाकर बोलने का नियम लिखो: 'कं पद्ध रामः'

› पहला भाग 'कं': यहाँ अनुस्वार (ं) है। नियम के अनुसार इसे नासिका-मात्रा की तरह बोलते हैं। 'म्' वाला पूरा बंद नहीं करना।

› दूसरा भाग 'पद्ध': यहाँ संयुक्त व्यंजन 'क् + ष्' की तरह समूह बनता है। इसे दोनों को तोड़कर अलग-अलग नहीं, साथ मिलाकर बोलना है।

› तीसरा भाग 'रामः' : विसर्ग (:) स्वर 'अ' के बाद है, इसलिए 'ह्' सदृश हल्का उच्चारण आएगा।

उत्तर – 'कं' में अनुस्वार (ं) का उच्चारण नासिका-मात्रा जैसा (नाक से) होगा; 'पद्ध' में संयुक्त व्यंजन है जिसे 'साथ मिलाकर' बोलेंगे; 'रामः' में विसर्ग (:) स्वर के बाद है, इसलिए 'ह्' सदृश हल्का उच्चारण होगा।

उदाहरण 9. वर्णों का उच्चारण-स्थान पहचानो: 'ट्', 'त्', 'प्', 'न' (दन्त/नासिका प्रभाव के हिसाब से सही स्थान चुनो)।

› 'ट्' पर ध्यान दो–यह मूर्धा-ध्वनि है, क्योंकि जीभ का आघात ऊपर/माथे की तरफ कठोर हिस्से पर लगता है।

› 'त्' पर ध्यान दो–यह दन्त-ध्वनि है, क्योंकि जीभ का सिरे से टच दाँतों के पास होता है।

› 'प्' पर ध्यान दो–यह ओष्ठ-ध्वनि है, क्योंकि होठ आगे आकर स्पर्श/बंद बनाते हैं।

› 'न' के लिए देखो–यह दन्त-क्षेत्र में बनता है (दाँतों के पास जीभ का स्पर्श), और कुछ स्थितियों में अनुनासिक/नासिका प्रभाव जुड़ सकता है, पर मूल 'न' दन्त-स्थान से है।

उत्तर – 'ट्'–मूर्धा, 'त्'–दन्त, 'प्'–ओष्ठ, 'न'–दन्त (मूल उच्चारण-स्थान)।

उदाहरण 10. निर्धारित करो कि निम्न वर्ण/प्रसंग आभ्यन्तर के किस प्रयत्न से संबंधित हैं: (1) 'क्' से 'म्' तक व्यञ्जन, (2) 'य्, र्, ल्, व्', (3) सभी स्वर, (4) 'श्, ष्, स्, ह्', (5) ह्रस्व 'अ'।

› देखो यह सवाल आभ्यन्तर के प्रयत्न पूछ रहा है, इसलिए स्पृष्ट/ईषत्-स्पृष्ट/विवृत/ईषत्-विवृत/संवृत में मिलान करो।

› 'क्' से 'म्' तक दिए व्यञ्जन पढ़ो–इनमें जिह्वा द्वारा स्थान का स्पर्श कराया जाता है, इसलिए स्पृष्ट।

› 'य्, र्, ल्, व्' को पढ़ो–इनमें स्पर्श थोड़ा ही होता है, इसलिए ईषत्-स्पृष्ट।

› 'सभी स्वर' को देखो–मुंह-विवर खुला रहता है, इसलिए विवृत।

› 'श्, ष्, स्, ह्' को देखो–मुंह-विवर थोड़ा खुला रहता है, इसलिए ईषत्-विवृत।

› ह्रस्व 'अ' पढ़ो–निःश्वास का मार्ग बंद रहता है और प्रयोग केवल ह्रस्व 'अ' में होता है, इसलिए संवृत।

उत्तर – (1) स्पृष्ट, (2) ईषत्-स्पृष्ट, (3) विवृत, (4) ईषत्-विवृत, (5) संवृत।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• उत्तर लिखते समय 'वर्ण = भाषा की सबसे छोटी ध्वनि-इकाई' लाइन जरूर लिखो।

• बोर्ड परीक्षा में माहेश्वर सूत्रों की संख्या और कुछ खास सूत्रों से निकलने वाले वर्णों के बारे में प्रश्न अक्सर आते हैं। 'इत्' वर्णों को ध्यान से समझना बहुत ज़रूरी है ताकि प्रत्याहार बनाते समय गलती न हो।

• प्रत्याहार से जुड़े प्रश्न अक्सर सीधे-सीधे पूछे जाते हैं कि इस प्रत्याहार में कौन से वर्ण आते हैं, या कोई वर्ण देकर पूछा जाता है कि यह किन प्रत्याहारों में शामिल हो सकता है। माहेश्वर सूत्र याद होने चाहिए।

• परीक्षा में 1-2-3 मात्राओं का नियम और 'प्लुत = ३' चिन्ह जरूर लिखना।

• उत्तर लिखते समय 'ँ' के आधार पर तुरंत अनुनासिक/निरनासिक तय करो।

• उत्तर लिखते समय 'हल् (्) = स्वर-रहित लेखन चिह्न' जरूर लिखो।

• लिखते समय तुरंत पहचान करो: क्-से-म् = स्पर्श; य/र/ल/व = अंतःस्थ; श/ष/स/ह = ऊष्म।

• विसर्ग और अनुस्वार के नियम लिखो–फिर उदाहरणों में स्वर के बाद/नासिका-मात्रा स्पष्ट करो।

• उत्तर लिखते समय सिर्फ 'जगह' नहीं, 'स्पर्श कहाँ' और 'ट्/त्/प्' का जोड़ा भी लिखो।

• आभ्यन्तर के 5 और बाह्य के 11 भेद के नाम याद करके ही लिखो–यही scoring point है।

एक नज़र में रिवीज़न

› - वर्ण = सबसे छोटी ध्वनि-इकाई

› 14 माहेश्वर सूत्र = संस्कृत वर्णमाला का आधार, शिव के डमरू से, 'इत्' वर्ण गिना नहीं जाता।

› प्रत्याहार = आदि वर्ण से अंतिम इत् वर्ण तक के बीच के वर्ण। इत् वर्ण छोड़ें।

› ह्रस्व 1 मात्रा, दीर्घ 2 मात्रा, प्लुत 3+ मात्रा

› 'ँ' लगा = अनुनासिक; 'ं' नहीं = निरनासिक।

› हल् (्) लगे तो स्वर OFF, व्यंजन बोलने को स्वर चाहिए।

› स्पर्श: क-म, अंतःस्थ: य-र-ल-व, ऊष्म: श-ष-स्-ह

› - अनुस्वार: नाक से, विसर्ग: स्वर के बाद 'ह्', संयुक्त: साथ मिलाकर।

› - क-गला, च-तालु, ट-मूर्धा, त-दन्त, प-ओष्ठ, न-नासिका

› - आभ्यन्तर: 5 भेद; बाह्य: 11 भेद (फेफड़ाकण्ठ)।